कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (13) खण्ड -{25}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- बुद्धि द्वारा निरंतर सत का संग करने से क्या बन जाएंगे ?

A- सच्चे सेवाधारी

B- शक्तिशाली

C- सहजयोगी

D- महारथी

प्रश्न सं 2- जो कभी माया के प्रभाव में ना आये ?

A- महावीर

B- महारथी

C- मायाजीत

D- माया प्रूफ

प्रश्न सं 3- कर्मों का हिसाब कब शुरू होता है ?

A- जब भगवान को भूल जाते

B- जब पतित बनते

C- गर्भ जेल में

D- जब बाबा का बनते

प्रश्न सं 4- दु:ख में सिमरण किसका करते है?

A- लोकिक बाप का

B- अलौकिक बाप का

C- पारलौकिक बाप का

D- A और C

प्रश्न सं 5- अब क्या होने वाला है ?

A. सारी दुनिया का विनाश

B. नई दुनिया की स्थापना

C. रावण का खात्मा

D. बेहद का दशहरा

प्रश्न सं 6- नेचुरल कैलेमिटीज आएंगी ..... के मुआफ़िक सब पिस कर खत्म हो जाएंगे ?

A. मच्छरों

B. सरसों

C. ताश के पत्तों

D. A और B

प्रश्न सं 7- सबसे बड़ा पाप कौनसा है ?

A. देहभान में आना

B. काम कटारी चलाना

C. हिंसा करना

D. उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8- हम परिस्तान कहाँ बनाएंगे ?

A. भारत की भूमि पर

B. सतयुग की धरनी पर

C. पुराने कब्रिस्तान पर

D. नई दुनिया में

प्रश्न सं 9- पुराना चोला छोड़ हम कहाँ जाएंगे?

A- परमधाम

B- बैकुण्ठ में

C- विष्णुपुरी में

D- नई दुनिया में

प्रश्न सं 10- बाप हम बच्चों का क्या बनकर आया है ?

A. सर्वेन्ट

B. धोबी

C. सौदागर

D. रत्नागर

प्रश्न सं 11- भक्ति मार्ग में लक्ष्मी से दीपमाला पर क्या मांगते हैं ?

A. सुख समृद्धि

B. रिद्धि सिद्धि

C. विनाशी धन

D. वैभव

प्रश्न सं 12- यहाँ तुम जितना योग लगाएंगे उतना क्या बढ़ेगा ?

A. शक्ति

B. सुख

C. शान्ति

D. आयु

प्रश्न सं 13- आत्मा और शरीर पवित्र किससे बन जाएंगे?

A. बाप की याद से

B. विकारों को छोड़ने से

C. मनमनाभव होने से

D. सर्व सम्बन्ध बाप के जोड़ने से

प्रश्न सं 14- गऊ मुख कौन है?

A- ब्रह्माबाबा

B- शिवबाबा

C- बच्चे

D- A और C

प्रश्न सं 15- यह सारी दुनिया क्या है ?

A- छी- छी पतित

B- कब्रिस्तान

C- टापू

D- रावण राज्य

प्रश्न सं 16- तुम जगत अम्बा के कौन से बच्चे हो?

A- ज्ञान- ज्ञानेश्वरी

B- राज- राजेश्वरी

C- योग- योगेश्वरी

D- उपरोक्त सभी

भाग (13) खण्ड {25} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं १. C सहजयोगी

कोई भी कार्य करते बापदादा को अपना साथी बना लो तो डबल फोर्स से कार्य होगा और स्मृति भी बहुत सहज रहेगी क्योंकि जो सदा साथ रहता है उसकी याद स्वत: बनी रहती है। तो ऐसे साथी रहने से वा *बुद्धि द्वारा निरन्तर सत का संग करने से सहजयोगी बन जायेंगे* और पावरफुल संग होने के कारण हर कर्तव्य में आपका डबल फोर्स रहेगा, जिससे हर कार्य में सफलता की अनुभूति होगी।

उत्तर सं २. B महारथी

महारथी वह जो कभी माया के प्रभाव में परवश नही होते या हार नहीं खाते बापदादा कहते है कि महारथी बनने लिए सिर्फ दो बातें याद रखो। कौन सी? एक तो *अपने को

सदैव साथी के साथ रखो। साथी और सारथी, वह है महारथी।* पुरुषार्थ में कमजोरी के दो कारण हैं। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अगर बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो जहाँ बापदादा साथ है वहाँ माया दूर से मूर्छित हो जाती है।

उत्तर सं ३ - C गर्भ जेल में

संन्यासियों का है ही हठयोग, निवृति मार्ग। कर्म संन्यास तो कभी होता ही नहीं। वह तब हो जब आत्मा शरीर से अलग हो जाए। *गर्भ जेल में फिर कर्मो का हिसाब शुरू हो जाता है।* बाकी कर्म संन्यास कहना रांग है, गर्भ जेल में रहने के दौरान कर्म बन्धन के हिसाब-किताब का चूकतू करना होता है। जेल से और गर्भ जेल से शिव बाबा ही छुड़ाते हैं। *अभी जाते हैं गर्भ जेल में ।* वहाँ सतयुग में तो गर्भ महल होता है । वहाँ पाप तो करते नहीं जो सजा खानी पड़े । हिंदू धर्म की एक अवधारणा है.।इसे जेलबर्ड भी कहते हैं जो कार्य-कारण के सिद्धांत की व्याख्या करती है. इस सिद्धांत के मुताबिक,

पिछले हितकर कार्यों का हितकर और हानिकारक कार्यों का हानिकारक प्रभाव प्राप्त होता है।

उत्तर सं ४ - C - पारलौकिक बाप का

दु:ख में सिमरण उस पारलौकिक बाप का उत्तर हैं। अब वह बाप आया हुआ है। यहाँ तो एक बाप ही पढ़ाते हैं। यह भी समझाना चाहिए कि दो बाप हैं - लौकिक और पारलौकिक। *दु:ख में सिमरण उस पारलौकिक बाप का करते हैं।* जितना याद में रहेंगे, पवित्र बनेंगे उतना पारलौकिक मात-पिता की दुआयें मिलेंगी, दुआयें मिलने से तुम सदा सुखी बन जायेंगे।".अरे, तुम्हारा बाप से सदा योग नहीं लगा था? वो तुम्हारा लौकिक बाप, यह तुम्हारा पारलौकिक बाप । वो तुमको दु:ख देने वाला है।

उत्तर सं 5- D - *बेहद का दशहरा*

अब सभी दुर्गति में पड़े हैं। आगे तुम नहीं जानते थे तो रावण को क्यों जलाते हैं। *अब तुम जानते हो बेहद का दशहरा होने वाला है।* यह सारी दुनिया बेट (टापू) है। रावण

का राज्य सारी सृष्टि पर है। जो शास्त्रों में है बन्दर सेना थी, बन्दरों ने पुल बनाई... यह सब हैं दन्त कथायें।

उत्तर सं 6- B - *सरसों*

बाप समझाते हैं - यह सारी पुरानी दुनिया इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जायेगी। पुरानी दुनिया को आग लगने वाली है। *नेचुरल कैलेमिटीज आयेगी, सरसों मुआफिक सब पीस कर खत्म हो जायेंगे।* बाकी कुछ आत्मायें बच जायेंगी। आत्मा तो अविनाशी है।

उत्तर सं 7- B - *काम कटारी चलाना*

तुम इन आसुरी 5 विकारों पर योगबल से जीत पाते हो। बाकी कोई हिंसक लड़ाई की बात नहीं है। तुम कोई भी प्रकार की हिंसा नहीं करते हो। तुम किसको हाथ भी नहीं लगायेंगे। तुम डबल अहिंसक हो। *काम कटारी चलाना, यह तो सबसे बड़ा पाप है।* बाप कहते हैं - यह काम कटारी आदि-मध्य-अन्त दु:ख देती है। विकार में नहीं जाना है।

उत्तर सं 8- C - *पुराने कब्रिस्तान पर*

देखो, बेहद का बाप कैसा है! तुमको स्वर्ग रूपी घर बनाकर देता है। स्वर्ग है नई दुनिया। नर्क है पुरानी दुनिया। नई सो पुरानी सो फिर नई बनती है। नई दुनिया की आयु कितनी है, यह किसको पता नहीं है। अभी पुरानी दुनिया में रह हम नई बनाते हैं। *पुराने कब्रिस्तान पर हम परिस्तान बनायेंगे।* यही जमुना का कण्ठा होगा, इस पर महल बनेंगे।

उत्तर सं 9- D - *नई दुनिया में*

बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया से सिर्फ ममत्व मिटा दो। अब हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। *यह पुराना चोला छोड़ हम जायेंगे नई दुनिया में।* याद से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे, इतनी हिम्मत करनी चाहिए।

उत्तर सं 10- A - *सर्वेन्ट*

चलते-फिरते सिर्फ बाप को याद करो और कोई जरा भी तकलीफ नहीं देता हूँ। अब तुम्हारी एक सेकेण्ड में चढ़ती कला होती है। *बाप कहते हैं - मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट बनकर आया हूँ।* तुमने बुलाया है - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ तो सर्वेन्ट हुआ ना।

उत्तर सं 11- C - *विनाशी धन*

तुम हो जगत अम्बा के बच्चे ज्ञान-ज्ञानेश्वरी, फिर बनेंगी राज-राजेश्वरी। तुम बहुत धनवान बनते हो। फिर *भक्ति मार्ग में लक्ष्मी से दीपमाला पर विनाशी धन मांगते हैं।* यहाँ तुमको सब कुछ मिल जाता है आयुश्वान भव, पुत्रवान भव।

उत्तर सं 12- D - *आयु*

वहाँ 150 वर्ष आयु रहती है। *यहाँ तुम जितना योग लगायेंगे उतनी आयु बढ़ती जायेगी।* तुम ईश्वर से योग लगाकर योगेश्वर बनते हो।

उत्तर सं 13- C - *मनमनाभव होने से*

बाप कहते हैं मैं धोबी हूँ। सब मूत पलीती आत्माओं को साफ करता हूँ। फिर शरीर भी शुद्ध मिलेगा। मैं सेकेण्ड में दुनिया के कपड़े साफ कर लेता हूँ। *सिर्फ मनमनाभव होने से आत्मा और शरीर पवित्र बन जायेंगे।* छू मन्त्र हुआ ना। सेकेण्ड में जीवन-मुक्ति, कितना सहज उपाय है।

उत्तर सं 14- C - *बच्चे*

यहाँ गऊ मुख पर जाते हैं। वास्तव में *गऊ मुख तुम (बच्चे) चैतन्य में हो।* तुम्हारे मुख से ज्ञान अमृत निकलता है। गऊ से तो दूध मिलता है। पानी की तो बात ही नहीं, यह सब कुछ बाप बैठ समझाते हैं।

उत्तर सं 15- C - *टापू*

यह सारी दुनिया बेट (टापू) है। रावण का राज्य सारी सृष्टि पर है। जो शास्त्रों में है बन्दर सेना थी, बन्दरों ने पुल

बनाई... यह सब हैं दन्त कथायें। भक्ति आदि चलती है, पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति, फिर व्यभिचारी भक्ति।

उत्तर सं 16- A - *ज्ञान-ज्ञानेश्वरी*

किसको समझाओ - पहले स्थापना फिर विनाश। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। प्रजापिता मशहूर है आदि देव, आदि देवी... जगत अम्बा के लाखों मन्दिर हैं। कितने मेले लगते हैं। *तुम हो जगत अम्बा के बच्चे ज्ञान-ज्ञानेश्वरी हो*, फिर बनेंगी राज-राजेश्वरी।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (13) खण्ड -{26}

प्रश्न सं 1- सबकी बुद्धि में कौनसी एक बात है?

A- वेद- शास्त्रों का ज्ञान

B- स्प्रिचुअल बाप की नॉलेज

C- ईश्वर सर्वव्यापी

D- भक्ति मार्ग का ज्ञान

प्रश्न सं 2- सब भक्ति क्यों करते हैं?

A बाप से वर्सा लेने के लिए

B- मनुष्य मनुष्य की सुनने के लिए

C- वाद-विवाद नहीं करने के लिए

D- भगवान से मिलने के लिए

प्रश्न सं 3- कौन से खेल को जानने से कभी मूँझते नहीं ?

A- बाजोली का

B- दुःख- सुख का

C- भक्ति- ज्ञान का

D- A और B

E- B और C

प्रश्न सं 4- किसको तोड़ना है?

A- संस्कारों को

B- देह- अभिमान को

C- माया को

D- रावण को

प्रश्न सं 5- सतयुग में रूहानी बाप से वर्सा क्यों नहीं मिलता ?

A- क्योंकि सभी मनुष्य है

B- क्योंकि जिस्मानी बाप से मिलता है

C- लक्ष्मी- नारायण भी देहधारी है।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- भक्ति का फल क्या है?

A- सद्गति

B- भगवान

C- जीवनमुक्ति

D- ज्ञान

प्रश्न सं 7- बाप का परिचय कौन देता है?

A- स्वयं

B- बी. के.

C- ब्रह्माबाबा

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 8-- बाप ज्ञान कब सुनाते हैं?

A- जब सब पतित बन जाते है।

B- संगम पर

C- जब पाप बहुत होते है।

D- जब नई दुनिया स्थापन करनी होती है।

प्रश्न सं 9- परमात्मा के साथ निरन्तर योग लगाओ तो क्या होगा ?

A- पाप नष्ट

B- सदा साथ का अनुभव

C- दैवी राज्य स्थापन

D- A और B

E- A, B, C

प्रश्न सं 10- ज्ञान, योग के साथ जीवन का आधार क्या है?

A- अष्ट शक्तियां

B- दैवी गुण

C- सृष्टि का आदि- मध्य- अन्त

D- धारणा और सेवा

प्रश्न सं 11- योग को अविनाशी योग क्यों कहते हैं ?

A- क्योंकि सारे विकर्म विनाश हो जाते हैं।

B- क्योंकि ईश्वर द्वारा सिखाया जाता है।

C- क्योंकि इससे सूर्यवंशी घराने की स्थापना होती है

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 12- किन तीनों का आपस में कनेक्शन है?

A- सेवा, ज्ञान, धारणा

B- ज्ञान, योग, धारणा

C- धारणा, योग, सेवा

D- ज्ञान,योग, सेवा

प्रश्न सं 13- देवताओं को क्या कहा जाता है ?

A- सर्वगुणसंपन्न

B- दैवी गुणों वाले मनुष्य

C- आत्मा

D- A और B

E- A, B और C

प्रश्न सं 14- परमात्मा से प्रीत बुद्धि किसकी है?

A- पाण्डवों की

B- शक्तियों की

C- यादवों की

D- Aऔर B

प्रश्न सं 15- यह अन्तिम जन्म है अब हम कहाँ जायेंगे ?

A- सतयुग में

B- नई दुनिया में

C- अपने घर

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 16- सतयुग में झाड़ कैसा होता है ?

A- छोटा

B- बड़ा

C- बहुत छोटा

D- A और C

भाग (13) खण्ड {26} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1 C - *ईश्वर सर्वव्यापी*

भक्ति को अंग्रेजी में फिलासॉफी कहते हैं। टाइटल मिलते हैं डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी। अब फिलासॉफी (भक्ति) तो छोटे बड़े मनुष्य सब जानते हैं। *कोई से भी पूछो

ईश्वर कहाँ रहते हैं, तो कह देंगे सर्वव्यापी है।*..... वह सब भक्ति करते हैं भगवान से मिलने के लिए। परन्तु भगवान को जानते नहीं तो भक्ति से क्या फायदा होगा। बहुतों को यह टाइटिल मिलता होगा डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी, *उन्हों की बुद्धि में तो एक ही बात है कि ईश्वर सर्वव्यापी है।*

उत्तर सं 2 D - *भगवान से मिलने के लिए*

अब शास्त्रों की कोई भी बात बाप नहीं सुनाते। कोई भी भगत को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। न उनमें ज्ञान है, न ज्ञान सागर के बच्चे हैं। ज्ञान सागर बाप को कोई नहीं जानते हैं। न अपने को बच्चा समझते हैं। वह *सब भक्ति करते हैं भगवान से मिलने के लिए।* परन्तु भगवान को जानते नहीं तो भक्ति से क्या फायदा होगा।

उत्तर सं 3 E - *B और C*

दु:ख और सुख, भक्ति और ज्ञान का जो खेल चलता है, इसको यथार्थ रीति जानने वाले कभी मूँझते नहीं। तुम जानते हो भगवान किसी को दु:ख नहीं देता, वह है दु:ख हर्ता

सुख कर्ता। जब सभी दु:खी हो जाते हैं, तब दु:खों से लिबरेट करने के लिए वह आते हैं।समझाया जाता है - ज्ञान और भक्ति। वह है दिन, वह है रात। ज्ञान से सुख, भक्ति से दु:ख, यह खेल बना हुआ है।

उत्तर सं 4 B - *देह-अभिमान को*

लक्ष्मी-नारायण भी देहधारी हैं। उनके बच्चे जिस्मानी बाप से वर्सा पाते हैं। यह बात ही न्यारी है। सतयुग में भी जिस्मानी बात हो जाती है। वहाँ यह नहीं कहेंगे कि रूहानी बाप से वर्सा मिलता है। *देह-अभिमान को तोड़ना है।* हम आत्मा हैं और बाप को याद करना है। यही भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है।

उत्तर सं 5. C- लक्ष्मी- नारायण भी देहधारी है।

बाप कहते हैं ज्ञान की अथॉरिटी, ज्ञान सागर मैं हूँ। मैं तुमको कोई शास्त्र आदि नहीं सुनाता हूँ। हमारा यह है रूहानी ज्ञान। बाकी सब है जिस्मानी ज्ञान। वह सतसंग आदि सब भक्ति मार्ग के लिए हैं। यह रूहानी बाप बैठ रूहों को समझाते

हैं इसलिए देही-अभिमानी बनने में बच्चों को मेहनत लगती है। हम आत्मायें बाप से वर्सा लेती हैं। बाप के बच्चे जरूर बाप की ही गद्दी के वारिस होंगे ना। *लक्ष्मी-नारायण भी देहधारी हैं। उनके बच्चे जिस्मानी बाप से वर्सा पाते हैं।* यह बात ही न्यारी है। सतयुग में भी जिस्मानी बात हो जाती है। वहाँ यह नहीं कहेंगे कि रूहानी बाप से वर्सा मिलता है।

उत्तर 6. D- ज्ञान

भक्ति का फल ज्ञान तुमको भगवान से मिलता है। भगवान कोई भक्ति नहीं सिखलाते हैं। वह तो ज्ञान देते हैं। कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और कोई पावन बनने का रास्ता ही नहीं।

उत्तर सं 7. A- स्वयं

बाप कहते हैं कि मैं सबका उद्धार करने आता हूँ। मैं ही आकर रूहानी ज्ञान देता हूँ। *बाप अपना परिचय दे रहे हैं। मैं तुम्हारा बाप हूँ।* अभी यह है नर्क। नई दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है।

उत्तर सं 8. C- जब पाप बहुत होते है।

पहले वह पावन होते हैं फिर पतित बनते हैं। सतगुरू तो एक ही सद्गति दाता है। मनुष्य गुरू करते ही तब हैं जब सद्गति में जाना चाहते हैं। *जब पाप बहुत होते हैं तब रूहानी बाप ज्ञान सुनाते हैं।*

उत्तर सं 9. A- पाप नष्ट

यह तो हम जानते हैं कि सच्चा योग तो खुद परमात्मा ही सिखलाए सूर्यवंशी चन्द्रवंशी घराना व दैवी राज्य स्थापन करते हैं। अब वो प्राचीन योग परमात्मा आकर कल्प-कल्प हमें सिखलाते हैं। कहते हैं हे आत्मा मुझ परमात्मा के साथ निरन्तर योग लगाओ तो तुम्हारे *पाप नष्ट* हो जायेंगे।

उत्तर सं 10. B- दैवी गुण

“ज्ञान, योग और दैवी गुणों की धारणा जीवन का आधार है" इसमें पहले है योग अथवा ईश्वरीय निरंतर याद,

जिससे विकर्मों का विनाश होता है। दूसरा है ज्ञान माना इस सारे ब्रह्माण्ड, सृष्टि की आदि-मध्य-अन्त कैसे होती है, जब यह नॉलेज हो तब ही इस लाइफ में प्रैक्टिकल चेंज आ सकती है और हम भविष्य प्रालब्ध अच्छी बना सकते हैं। तीसरी प्वाइन्ट है - क्वालिफिकेशन तो हमको सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण अवश्य बनना है तब ही देवता बन सकते हैं।

उत्तर सं 11. B- क्योंकि ईश्वर द्वारा सिखाया जाता है।

यह ईश्वरीय योग भारत में प्राचीन योग के नाम से मशहूर है। इस योग को अविनाशी योग क्यों कहते हैं? *क्योंकि अविनाशी परमपिता परमात्मा (ईश्वर) द्वारा सिखाया गया है।* भल योग और मनुष्य आत्मायें भी सिखाती हैं इसलिये योगाश्रम वगैरा खोलते रहते हैं परन्तु वो प्राचीन योग सिखला नहीं सकते। अगर ऐसा योग होता तो फिर वो बल कहाँ!

उत्तर सं 12. B- ज्ञान, योग, धारणा

इस एक ही जन्म में ज्ञान बल, योग बल और दैवी गुणों की धारणा की जाती है। तीनों का आपस में कनेक्शन है - ज्ञान बिगर योग नहीं लग सकता और योग बिगर दैवी गुणों की धारणा नहीं होती, इन तीनों प्वाइन्ट पर सारी जीवन का आधार है, तब ही विकर्मों का खाता खलास हो अच्छे कर्म बनते हैं।

उत्तर सं 13. D- A और B

ज्ञान का सागर सिर्फ एक को कहा जाता है। दैवी गुण उनमें होते हैं, ज्ञान से होते हैं; परन्तु यह ज्ञान जो तुम बच्चों को अभी मिलता है, वो सतयुग में नहीं होता है । पीछे इनका जो फल है राज करना और जो दैवी गुण धारण करते हो, तो *इनमें दैवी गुण हैं, तुम खुद इनकी महिमा करते हो बरोबर । कहते हो सर्वगुण सम्पन्न हो, सोलह कला सम्पूर्ण हो।* ऐसे गाते हो ना। तो तुमको भी तो ऐसा ही बनना होता है ना। तो अपने से पूछना चाहिए- मेरे में सभी दैवी गुण हैं? या कोई भी आसुरी गुण है? आसुरी गुण है, तो निकाल देना चाहिए, तभी

देवता बनेंगे। अगर नहीं निकालते हैं तो भले देवता बनते हैं, परंतु कम दर्जे के।

उत्तर सं 14. A- पाण्डवों की

पाण्डवों की तरफ तो है परमपिता परमात्मा। *पाण्डव हैं विनाश काले प्रीत बुद्धि,* कौरव और यादव हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। जो परमपिता परमात्मा को मानते ही नहीं। (30.11.18)

तुम पाण्डव हो तो वो कौरव हैं, काँग्रेस है। तो आपस में दो भाई हो ना। *अभी तुम्हारी भी बाप से प्रीत बुद्धि है,* क्योंकि बाप ने आ करके तुमको अपना परिचय दिया है। तो गाया जाता है ना। वो तो कहते हैं- सर्वव्यापी है, तो प्रीत हो नहीं सकती है। (3.6.1965)

उत्तर सं 15. C- अपने घर

उनकी बुद्धि में रहेगा कि अब इस दुनिया में दूसरा जन्म हमें नहीं लेना है और न तो दूसरों को जन्म देना है। यह पाप

आत्माओं की दुनिया है, इसकी वृद्धि अब नहीं चाहिए। इसे विनाश होना है। हम इन पुराने वस्त्रों को उतार *अपने घर जायेंगे।* अब नाटक पूरा हुआ।

उत्तर सं 16. A- छोटा

बाप कितना सहज कर सुनाते हैं, परन्तु माया-रावण भुला देती है। अभी इस पुरानी

दुनिया का अन्त है। वह है अमरलोक, वहाँ काल होता नहीं। बाप को कहते हैं आओ साथ में हम सभी को ले चलो। तो काल ठहरा ना। *सतयुग में कितना छोटा झाड़ है!* अभी बहुत बड़ा झाड़ है।